17 अगस्त 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 10 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

36वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' मुम्बई द्वारा दिनांक 04 से 13 अगस्त 2013 तक 36वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री रमेशचन्दजी कोदरलालजी दोशी मुम्बई एवं श्री सुभाषचन्दजी सुरेशचन्दजी वकीलचन्दजी नांगलोई के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री ज्ञानचन्दजी कोटा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का परिचय ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसंतभाई एम. दोशी मुम्बई एवं श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का सम्मान श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं शिविर के निर्देशक श्री अशोकजी जैन जबलपुर ने तिलक लगाकर एवं माल्यार्पणकर किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री गुलाबचन्दजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर ने, मंच का उद्घाटन आदीश्वरजी अमितकुमारजी जैन परिवार सूरत ने, चित्र अनावरण श्री निहालचन्दजी जैन जयपुर ने एवं ध्वजारोहण श्री अनिलकुमारजी दोशी मुम्बई ने किया।

इस अवसर पर विद्वत् शिरोमणि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का शिविरों की उपयोगिता के संदर्भ में मार्मिक उद्बोधन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने किया।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की प्रारंभिक गाथाओं पर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रातःकाल पंचास्तिकाय एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रथम प्रवचन में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित शैलेषभाई तलोद आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त मिला।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा निमित्त-उपादान, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक (निश्चयाभासी प्रकरण), ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा छहढाला(पहली ढाल), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा समयसार (गाथा-74), पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयों का सामान्य स्वरूप एवं पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र (द्वितीय अध्याय-पाँच भाव) की कक्षा ली गई। सायंकाल ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अनिलजी भिण्ड एवं रजनीभाई दोशी आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रातःकालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित जयकुमारजी कोटा, पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित शिखरचन्दजी विदिशा, श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर, पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त 6.30 बजे से 7.00 बजे तक प्रतिदिन जी-जागरण चैनल पर आने वाले समयसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण होता था।

36वें शिक्षण शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री भभूतमल चम्पालालजी भंडारी, श्री नवीनचंद केशवलाल मेहता मुम्बई, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री प्रवीणचन्द सी. मेहता सूरत, श्रीमती भारतीबेन आर. कोठारी मुम्बई एवं श्री शान्तिनाथ व अजितजी जैन बड़ौदा थे।

इस अवसर पर श्री भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजनकर्ता डॉ. अरविन्दजी दोशी गौन्डल, श्री विजयजी कौशल

(शेष पृष्ठ 5 पर...)

सम्पादकीय –

इतना करो तो बस...

– सिद्धान्तसूरि पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जिनागम में सम्यग्दर्शन के चार लक्षण कहे गये हैं – 1. तीन मूढ़ता रहित सच्चे देव–गुरु–शास्त्र का श्रद्धान, 2. तत्त्वार्थश्रद्धान अर्थात् सात तत्त्वों का यथार्थश्रद्धान, 3. स्व–पर भेदविज्ञान अर्थात् पर और पर्याय से पृथक् आत्मश्रद्धान, 4. शुद्धात्मानुभूति अर्थात् अभेद, अखण्ड एक चिन्मात्र ज्योति स्वरूप कारण परमात्मा की अनुभूति।

यद्यपि ये जो चार लक्षण कहे, उनमें सच्ची दृष्टि से एक लक्षण ग्रहण करने पर चारों लक्षणों का ग्रहण हो जाता है, तथापि भिन्न–भिन्न अर्थ/लक्षण विचार कर अन्य–अन्य प्रकार लक्षण कहे हैं।

(अ) जहाँ देव गुरु–धर्म का श्रद्धान सम्यग्दर्शन का लक्षण कहा है, वहाँ बाह्य साधन (निमित्तों) की प्रधानता से कथन किया है, क्योंकि अरहंत देवादिक का श्रद्धान ही सच्चे तत्त्वार्थश्रद्धान का कारण है और कल्पित कुदेवादिक का श्रद्धान मिथ्यात्व का कारण है। अतः बाह्यकारण की अपेक्षा से कुदेवादिक का श्रद्धान छुड़ाकर सुदेवादिक का श्रद्धान कराने के लिए सच्चे वीतरागी देव, अनेकान्तमयी शास्त्र तथा निर्ग्रन्थ भावलिंगी गुरु के श्रद्धान को सम्यक्त्व का लक्षण कहा है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है –

श्रद्धानंपरमार्थनां आप्तआगम तपोमृतां।
त्रिमूढ़ापोढमष्टागां सम्यग्दर्शनमश्यम्।।

– आ. समन्तभद्र

तीन मूढ़ता रहित एवं आठ अंग सहित सच्चे देव–गुरु का श्रद्धान करना ही सम्यग्दर्शन है। यह कथन

(ब) **'तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक्दर्शनं –** आ. उमास्वामी के लक्षण का प्रयोजन यह है कि – यदि इन सात तत्त्वों को पहचान लें तो यथार्थ वस्तु के स्वरूप का व अपने हित–अहित का श्रद्धान हो। जैसे कि – जीवतत्त्व को ध्येय एवं अजीव तत्त्व को ज्ञेय जाने, आस्रव बंध को हेय मानें, संवर–निर्जरा को एक देश उपादेय और मोक्ष को पूर्ण उपादेय मानकर श्रद्धा करें।

(स) आपापर के श्रद्धान का प्रयोजन यह है कि – मुख्य रूप से मैं जीव हूँ। शरीर अजीव हैं – ऐसा जानकर अत्यन्त निकटवर्ती शरीर से जब राग कम होगा तो शरीर से संबंधित पर संयोगों से मोह कम हो ही जायेगा।

(द) जहाँ आत्मश्रद्धान सम्यक्दर्शन का लक्षण कहा – वहाँ पर से भिन्न आपको (स्वयं को) ही आपरूप जानने की बात है। इससे सम्पूर्ण पर और पर्याय के विकल्प टूट जाते हैं। शुद्ध आत्मानुभूति हो जाती है। वस्तुतः सम्यग्दर्शन का यह स्वरूप ही कार्यकारी है।

छहढाला में स्पष्ट कहा है – ''परद्रव्यन तैंभिन्न आपमें रुचि सम्यक्त्व भला है।''

मिथ्यात्व के उपशमादि होने पर जहाँ विपरीताभिनिवेश का अभाव होता है, वहाँ चारों ही लक्षण युगपत् पाये जाते हैं। यद्यपि प्रारंभ में ज्ञानोपयोग में नाना प्रकार के विचार होते हैं, सापेक्षपना पाया जाता है। परन्तु तत्त्व निर्णय के बाद श्रद्धा में एकरूपता होती है।

उक्त चारों लक्षणों में 'तत्त्वार्थश्रद्धान' लक्षण मुख्य है; क्योंकि इस लक्षण में चारों ही लक्षण समाहित हैं फिर भी इसे अलग से इसलिए कहा कि इसके होने पर ही शेष सार्थक होते हैं।

जैसे कि सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के श्रद्धान लक्षण में इतना ही भासित होता है कि अरंहतादि को ही मानना, अन्य रागी–द्वेषी देवों को सच्चा देव नहीं मानना आदि।

इसीप्रकार आपापर के श्रद्धान में मात्र यही भासित हो कि आपापर को ही जानना, यही सम्यक्त है, किन्तु आस्रवादि का स्वरूप भासित न हो तो भी मोक्षमार्ग का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

आत्मश्रद्धान लक्षण में ऐसा मान लें कि आत्मा ही का विचार कार्यकारी है, इसी से सम्यक्दर्शन होता है, वहाँ भी जीव–अजीव के विशेष भासित न हों तो भी मोक्षमार्ग के प्रयोजन की सिद्धि नहीं हो। अतः तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यक्दर्शनं लक्षण को मुख्य रखा है।

तत्त्वार्थ का निर्णय करने के लिए स्याद्वादशैली में लिख गये अनेकान्तमयी धर्म के निरूपक शास्त्रों का स्वाध्याय करना होगा। वे शास्त्र सर्वज्ञ (अरहंत) देव की वाणी को सुनकर गणधर देवों द्वारा निरूपित हैं, उन्हें समझने के लिए निर्ग्रन्थ ज्ञानी गुरू ही परम शरण हैं अतः देव एवं गुरु की शरण में जाकर सर्वप्रथम तत्त्वार्थ

को समझें एतदर्थ सर्वज्ञ का स्वरूप समझना भी अनिवार्य है।

कुन्दकुन्द स्वामी ने प्रवचनसार गाथा 80 में लिखा है –

द्रव्य गुण पर्याय से, जो जानते अरहंत को।
वे जानते निज आत्मा दृग मोह उनका नाश हो।।

जो वास्तव में अरहंत को द्रव्य से, गुण से और पर्याय से जानते हैं; वे वास्तव में आत्मा को जानते हैं; क्योंकि दोनों में कोई अन्तर नहीं है। ऐसा ज्ञान होने पर उनका मोह अवश्य क्षय हो जाता है। अतः आत्महित के लिए सर्वप्रथम सर्वज्ञ (केवलज्ञानी) के स्वरूप का निर्णय करें।

हम जिनका उपदेश सुनते हैं और जिनके बताये मार्ग पर चलना चाहते हैं, जिनके दर्शन, पूजन कर हम कतार्थ होना मानते हैं, ऐसे अरहंत की यथार्थ पहचान यदि हमें नहीं है, उनके वीतरागी एवं सर्वज्ञता की यथार्थ प्रतीति नहीं है तो हम उन्हें बिना जाने/पहचाने किसके दर्शन–पूजन करते हैं? क्या यह विचारणीय बात नहीं है?

अरहंत के स्वरूप को जानकर अपने स्वरूप को जानने/पहिचानने को ही सम्यग्दर्शन कहते हैं। अतः सम्यग्दर्शन के लिए सर्वज्ञ को जानना अनिवार्य है और यह बिल्कुल कठिन नहीं है, अत्यन्त सरल है। हाँ, दुर्लभ इस दृष्टि से अवश्य है कि यदि इस भव में सम्यग्दर्शन नहीं हुआ तो फिर कभी होने की संभावना नहीं है। अतः हमें जो यह मनुष्य भव, जैन कुल में जन्म, जिनवाणी सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, इसे नहीं चूकना चाहिए, विषय कषायों में नहीं खोना चाहिए।

अतः हम सब कार्यों को गौण करके सर्वप्रथम सर्वज्ञ का स्वरूप जानकर उनकी श्रद्धा करें।

भेदज्ञान अर्थात् निजपर की पहचान ही मोक्ष का साधन है। समयसार कलश में कहा भी है –

भेद विज्ञानतः सिद्धाः सिद्धाः ये किलकेचन।
अस्यैवाभावतोबद्धा बद्धा ये किलकेचन।।131।।

– आचार्य अमृतचन्द्र

तात्पर्य यह है कि जब तक जीव को भेदविज्ञान नहीं होता, तबतक जीव कर्मों के बंधन में रहता है।

संसार में भटकने की कारणभूत मुख्य चार भूलें हैं – पर में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व। जब तक ये भूलें नहीं निकलतीं तब तक कठोर से कठोर बाह्य धर्म की साधना कर्म बंधन से मुक्त नहीं करा सकती। यह जानकर जैसे बने तैसे सर्वप्रथम उक्त भूलें मिटाना होंगी। एकत्व–ममत्व मिटाने के लिए निरन्तर भेदज्ञान की भावना जरूरी है तथा कर्तृत्व का अहंकार मिटाने के लिए वस्तु स्वातंत्र्यका सिद्धान्त समझना होगा।

भोक्तृत्व भाव का अभाव करने हेतु यह जानना होगा कि पर में सुख है ही नहीं तो मिलेगा कहाँ से?एतदर्थ छहढाला की प्रथम ढाल का बारम्बार अध्ययन, मनन करणीय है। जब प्रथम ढाल के माद्यम से चर्तुगति के दुःखों का परिचय हो जायेगा तो उसके कारणों को जानने की जिज्ञासा स्वतः हो जायेगी।

एतदर्थ हम दूसरी ढाल को पढेंगे ही. उसमें कहा गया है कि इन दुःखों के कारम मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान एवं मिथ्याचारित्र है उन्हें जानकर उनसे वचने के लिए सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्र को तीसरी एवं चौथी ढाल को पढ़ने की प्रेरणा भी सहज ही मिलेगी, फिर पाँचवीं ढाल में बारह भावनाओं के माध्यम से तथा छठवीं ढाल में स्वरूपाचरम चारित्र आदि के माध्यम से वस्तु स्वरूप का ज्ञान सहज हो जायेगा।

इसप्रकार हम देखत हैं छहढाला वस्तुतः छोटा समयसार है। इस छोटे से ग्रन्थ से जीव को निगोद से निकालकर मोक्ष तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से यह ग्रन्थ अद्भुत है।

आबाल वृद्ध सभी को पढ़ने लायक ही नहीं, प्रतिदिन पाठ करने लायक है।

बस, इतना जाना तो सम्पूर्ण जिनवाणी का रहस्य जानने में आ जायेगा। इसीलिये कहा है कि यह लाख बात की एक बात है तथा करोड़ों ग्रन्थों का सार है –

छहढाला में कहा भी है –

''लाख बात की बात, यही निश्चय उर में लाओ'' तथा 'कोटि ग्रन्थ का सार यही, सिं नित प्रति ध्याओ।'

किसी ने यह भी ठीक ही कहा है –

पर से खस निज में बस, आयेगा अतिन्द्रिय आनन्द का रस।
यही है भेदविज्ञान का कस, इतना करें तो बस।। ●

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से वाशिंगटन में प्रवचन

दसलक्षण पर्व के अवसर पर विदुषी स्वानुभूति जैन, मुम्बई द्वारा प्रतिदिन मुम्बई से ही वाशिंगटन डी.सी. स्थित मुमुक्षुओं के लिये प्रतिदिन वीडियो कॉन्फ्रेंसिग से प्रोजेक्टर के माध्यम से लाईव इन्टरेक्टिव प्रवचन किये जायेंगे।

विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क करें –

pavanzaveri@yahoo.com

पाठकों के पत्र

राजकोट से श्री सुनीलजी शास्त्री लिखते हैं कि –

''जून मास का जैनपथप्रदर्शक अंक पढा। पृष्ठ 4 और 5 पर 'जिनवाणी की सुरक्षा का उपाय' के नाम से सारस्वत परिकल्पना एवं तार्किक विधा से विभूषित समग्र लेख अथ से इति तक वाचक के मन को विचार वीथी में ला खड़ा करता है। यह आलेख मां भारती–जिनवाणी की जीवन्त ऐसी चिरंजीवी व्यवस्था की भावना एवं प्रेरणा से पूरित है।

ताम्रपत्तों पर उल्लिखित करना अथवा संगमरमर के पाटियों पर उत्कीर्ण करना इन दोनों विधाओं से हटकर जीवित ऐसे समाज के बालमानस परसत के संस्कारों का बीजारोपण करना यह एक अप्रतिम माध्यम दर्शाया गया है, जो वर्तमान परिस्थिति में अत्यन्त जरूरी ऐसी विचारधारा का सूत्रपात का परिचायक है।

वर्तमान में 'बढते भगवान, घटते भक्त' का युग प्रवर्तता प्रतीत होता है। धर्मायतनों की मानों बाढ से आयी लगती है। ऐसी स्थिति में मुमुक्षु समाज के धन एवं अमूल्य शक्ति के अपव्यय को बचाकर धर्मप्रचार की यथार्थ धारा में लगाने का यह सफल प्रयास है।

पल्लवग्राही पाण्डित्य के धनी वाचाल ऐसे तथा कथित विद्वानों की बहुलताभरी परिस्थिति में विचक्षण, प्रतिष्ठाप्राप्त, सफल विद्वान की सत्य की खोज समाज के लिए कितना अपेक्षित है यह विचार बिन्दु तो अतिशय मार्मिक लगा।

जयपुर में महाविद्यालयीन विद्यार्थी जीवन के काल में दैनिक स्वाध्याय के अन्तर्गत आपके विचाररत्नों में से एक विचार मोती अभी इस समय स्मृति पटल पर प्रत्यक्ष वर्त रहा है, आपने फरमाया था कि 'मेरे हाथों तले, मेरे मार्गदर्शन के माध्यम से समाज में आज प्रतिभा सम्पन्न व अच्छे से अच्छे हजारों विद्वान तैयार है, परन्तु विडम्बना इसी बात की है कि समाज आज भी अच्छे विद्वान से वंचित है।'

आपके यह उद्‌गार समाज की संकीर्ण मानसिकता को दर्शाने के लिए काफी है।

मन्दिरों, बड़े–बड़े (विशालकाय) धर्मायतनों की बाह्य–भौतिक व्यवस्था के साथ साथ आन्तरिक आध्यात्मिक धर्मव्यवस्था, धार्मिक वातावरण के निर्माण करने के लिए आपका यह आह्वानन परमार्थ से अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय है।

दादा, आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस दिन प्रात: मैंने आपका अपूर्व लेख पढा उसी दिन पूज्य गुरुदेवश्री के दैनिक टेपप्रवचन के अन्तर्गत शक्तियों के प्रवचन में आया कि 'हमने यहाँ कभी किसी दिन मंदिर बनाने के लिए कहा नहीं, पैसे के लिए कभी किसी से कहते नहीं हैं, हाँ, पुस्तक के लिए जरूर कहा है कि यह पुस्तक तो हजारों की संख्या में छपावो ....।'

संक्षेप में इतना ही कहना चाहूंगा कि परम पूज्य गुरुदेवश्री की तत्त्वप्रचार की विचार पद्धति और आपकी विचार शैली दोनों में बहुत समन्वय है, मैं दोनों से सम्पूर्णतया अभिभूत हुआ हूँ। निकट भविष्य में भी आपकी सारस्वत विद्यानिपुणता हम विद्वत्वर्ग और समाज के लिए उपयोगी मार्गदर्शन देती रहेगी और पत्र–पत्रिकाएँ आपके ऐसे ही प्रखर, प्रासंगिक विचार मोतियों से अनुप्रणित होती रहेंगी। ऐसी मंगलकामना।

आपके स्वास्थ्य की शुभकामनाओं के साथ विराम लेता हूँ।''

(पृष्ठ 7 का शेष ...)

तो वे कहने लगे – ये तीनों तीर्थंकर के साथ–साथ चक्रवर्ती और कामदेव भी तो हैं।

मैंने कहा – यह कहो न कि आपको पैसेवाले चक्रवर्ती और शरीर की सुन्दरतावाले कामदेव चाहिए। अरे भाई ! जो मूर्ति है, वह अरहंत की है। अरहंत चक्रवर्ती नहीं होते, जब चक्रवर्तित्व छोड़ते हैं, तब अरहंत बनते हैं। जिस शरीर की सुन्दरता की तुम बात कर रहे हो, सबसे पहले भेदविज्ञान तो उस शरीर से ही किया जाता है।

इसप्रकार यदि आप ९६ हजार पत्नियों के पति को मुख्यता दोगे तो फिर बालब्रह्मचारियों का क्या होगा, बालयति तीर्थंकरों का क्या होगा?

उसमें परिवारवाद की झलक थी और इसमें पैसे की महिमा है, शरीर की सुन्दरता की महिमा है; वीतरागता और सर्वज्ञता की तो कोई बात ही नहीं करता।

वैष्णवों के मंदिरों में राम परिवार, शैवों के मंदिरों में शिव परिवार की मूर्तियाँ होती हैं; अब तो एक ही मंदिर में राम परिवार और शिव परिवार एक साथ ही मिल जावेंगे। उसी की तुलना में आप ऋषभ परिवार को क्यों विराजमान नही करते।

बीच में ऋषभदेव, एक ओर नन्दा और दूसरी ओर सुनन्दा। कितना अच्छा लगता। कारीगरों को भी अपनी कला दिखाने का मौका मिल जाता। इसके लिए उन्हें यक्ष–यक्षणी नहीं बनाने पड़ते।

पर नहीं, हमने ऐसा नहीं किया; क्योंकि हम वीतरागता के उपासक हैं, ऐसा नहीं कर सकते थे।

मैं किसी के ऊपर आरोप नहीं लगा रहा हूँ। हो सकता है उन्होंने ऐसा कुछ सोचा ही न हो, पर मैं तो यह कह रहा हूँ कि यदि कोई ऐसा सोचता है तो वह ठीक नहीं है।

अरे, भाई ! जहाँ–जहाँ ऋषभदेव के साथ भरत–बाहुबली की मूर्तियाँ हैं; शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ की मूर्तियाँ हैं; पंच बालयतियों की प्रतिमाएँ हैं; मैं उन सभी की अत्यन्त भक्तिभाव से पूजा करता हूँ; उन्हें भी परमपूज्य मानता हूँ, मैं उन मूर्तियों पर प्रश्नचिह्न नहीं लगा रहा हूँ। मैं तो आपके मनों में जो अज्ञान भरा हुआ है, उसका उद्‌घाटन कर रहा हूँ।

यदि मेरी बात में आपको कुछ दम लगे तो उस पर एक बार गंभीरता से विचार अवश्य करें। मानना न मानना तो पूरी तरह आपके ही हाथ में है; अत: आप इस बात की चिन्ता न करें कि इससे तो...। (क्रमश:)

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्री समन्तभद्र शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत छात्रों द्वारा साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन हुआ।

(1) प्रथम गोष्ठी दिनांक 21 जुलाई को हुई, जिसमें कक्षा 6 से 10 तक के 5 विद्यार्थियों ने भाग लिया। गोष्ठी का विषय था 'देव-शास्त्र-गुरु - एक अनुशीलन'। इस अवसर पर गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. गुलाबचन्दजी जैन (मंत्री-ट्रस्ट समिति) ने की।

इस गोष्ठी में अरहंत, सिद्ध, शास्त्र, गुरु आदि का स्वरूप व देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धा की आवश्यकता आदि विषयों पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर दो श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में अभिषेक जैन (कक्षा-7) और अक्षय जैन (कक्षा-10) को चुना गया।

गोष्ठी का मंगलाचरण प्रवीण जैन ने एवं संचालन सोहिल जैन खड़ैरी ने किया।

(2) द्वितीय गोष्ठी दिनांक 28 जुलाई को हुई, जिसका विषय था 'चार अनुयोग - एक अनुशीलन'। इस अवसर पर गोष्ठी की अध्यक्षता श्री चन्द्रभानजी ने की।

इस गोष्ठी में प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग आदि चार अनुयोगों का स्वरूप व इन चारों अनुयोगों से वीतरागता का पोषण आदि विषयों पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण नयन जैन ने एवं संचालन प्रतीक जैन ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

छिन्दवाड़ा, श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री नरेन्द्रजी जयपुर, पण्डित शिखरचन्दजी विदिशा, श्री मगनलाल (मामा) आरोन एवं श्री ऋषभकुमारजी जैन रहली थे।

शिविर के अवसर पर परमभावप्रकाशक नयचक्र, पंचास्तिकाय परिशीलन, सिद्ध भक्ति, नियमसार कलश पद्यानुवाद, समयसार अनुशीलन भाग 2, जीव जीता कर्म हारा, नक्शों में दशकरण, गुणस्थान प्रवेशिका, राम कहानी, मुक्ति का मार्ग (मराठी) आदि पुस्तकों का विमोचन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित रमेशचन्दजी सनावद एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर के साथ टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं श्री अशोकजी जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये।

अंतिम दिन दिनांक 13 अगस्त को श्री अशोकजी जैन जबलपुर ने सभी विद्वानों एवं शिविरार्थियों का तथा पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों का सहयोग के लिये आभार प्रदर्शन किया। ●

तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार बोर्ड का -

वार्षिक अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 11 अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के सलाहकार बोर्ड का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभी प्रमुख विद्वत्गण गणमान्य श्रेष्ठी वर्ग एवं ट्रस्ट के ट्रस्टीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अमृतभाई सी.मेहता फतेहपुर ने एवं उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ ने किया।

ट्रस्ट के आय-व्यय का विवरण श्री विमलकुमारजी नीरू केमिकल्स दिल्ली ने प्रस्तुत किया। ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई एम.दोशी ने प्राप्त सुझावों का क्रियान्वयन एवं विभिन्न वक्ताओं के प्रश्नों का समाधान किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक सुझावों का लाभ मिला। कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने एवं आभार प्रदर्शन श्री अशोकजी जबलपुर ने किया।

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

1. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री ने दिसम्बर 2012 में आयोजित नेट परीक्षा एज्यूकेशन विषय से उत्तीर्ण की। आप वर्तमान में कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान विषय पर पीएच.डी. कर रहे हैं।

2. टोडरमल महाविद्यालय के दो विद्यार्थियों अच्युतकांत जैन जसवंतनगर (79%) एवं कु. अनुभूति जैन दिल्ली (81%) को वरिष्ठ उपाध्याय में 75% से अधिक अंक प्राप्त करने पर राजस्थान सरकार द्वारा लेपटॉप देकर सम्मानित किया गया।

3. टोडरमल महाविद्यालय की छात्राओं कु. श्रुति जैन दिल्ली एवं कु. प्रतीति पाटील जयपुर ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान विश्वविद्यालय में शास्त्री तृतीय वर्ष की वरीयता सूची में क्रमश: प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

उक्त सभी को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

रक्षाबंधन पर्व मनाया

जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार, गुरुवर धर्म के रक्षणहार।
दुष्टबली जब कुमति उपाई, संघ घेर नरमेघ रचाई।
मच गया गजपुर हाहाकार।।1।।
संघ उपसर्ग की खबर सु-पाकर, पुष्पदंत मुनि अति घबराकर।
आकर तुमसे करी पुकार।।2।।
गुरु तुम वीतरागता धारी, विक्रिया ऋद्धि प्रकट भई भारी।
उमड़ा वात्सल्य सुखकार ।।3।।
बौने द्विज का वेष बनाया, चमत्कार तप का दिखलाया।
पड़ गया बलि नृप चरण मँझार।।4।।
मुनियों का उपसर्ग मिटाया, सबको दया धर्म सिखलाया।
हुआ जिनधर्म का जय जयकार।।5।।
क्षमा भाव धरि बलि को छोड़ा, उसने हिंसा से मुख मोड़ा।
धारा जैन धर्म सुखकार ।।6।।
सर्वजनों में आनन्द छाया, रक्षाबन्धन पर्व मनाया।
हर्षित होय दिया आहार ।।7।। **- ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'**

सिद्धभक्ति

4 –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

द्वितीय पूजन की जयमाला

द्वितीय पूजन की जयमाला आरंभ करने के पूर्व मैं महाकवि संतलालजी की काव्यप्रतिभा एवं कल्पनालोक की उड़ान का एक नमूना प्रस्तुत करना चाहता हूँ। इससे आपको पता चलेगा कि यह सिद्धचक्र पूजन विधान कोरी तुकबंदी नहीं है। इसमें वे सब बातें देखने को मिलेंगी कि जो एक महाकवि के काव्य में होनी चाहिए।

इसी विधान की दूसरी पूजन में समागत जल के छन्द को देखिये –

(हरिगीतिका)

हिमशैल धवल महान कठिन पाषाण तुम जस रासतै।
शरमाय अरु सकुचाय द्रव ह्वै बही गंगा तासतैं।।
सम्बन्ध योग चितार चित भेटार्थ झारी में भरूँ।
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।१।।

कवि भगवान के चरणों में जल समर्पित कर रहा है। उसको प्रस्तुत करते हुए वह कहता है –

धवल हिमालय पर्वत अत्यन्त कठोर बर्फीले पाषाण से निर्मित है; अत: उसके पिघलने का कोई सवाल नहीं था; क्योंकि पाषाण हृदय लोग पिघला नहीं करते; किन्तु हे भगवन ! आपके ढेर सारे यश के प्रताप से शरमा कर और सकुचा कर वह द्रवित हो उठा है, पिघल गया है; उसी जल से गंगा नदी की विशाल धारा बहने लगी।

संबंध योग का चित्त में विचार कर मैं भी उसी गंगा का जल झारी में भरकर तुम्हारे चरणों में समर्पित करने के लिए लाया हूँ। अत: सोलह गुणों से युक्त सिद्धों के समूहरूप सिद्धचक्र का चिन्तवन करके हृदय से पूजन करता हूँ।

संबंध योग क्या है ? – यह तो आप जानते ही होंगे। जो हमारे इष्ट हों, जिनके हम परमभक्त हों, जो हमारे आराध्य हों; उनके संयोग में जो-जो वस्तुएँ आती हैं, हम उनसे भी उतना ही प्यार करने लगते हैं, जितना अपने इष्ट से करते हैं।

महाकवि रसखान लिखते हैं –

(मत्तगयंद सवैया)

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि, नवों निधि को सुख, नंद की धेनु चराय बिसारौं।।
रसखान कबौं इन आँखिन सों, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक हू कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

गाय चराते समय श्रीकृष्ण भगवान के कंधे पर जो कम्बल रखा था; उस कंबल के ऊपर मैं तीन लोक का राज्य न्यौछावर कर सकता हूँ। आठों सिद्धियों और नौ निधियों के सुख को श्रीकृष्ण के पालक नंद की गायों के चराने में भूल सकता हूँ।

रसखान कवि कहते हैं कि मैं इन आँखों से ब्रज के वन, उपवन और तालाबों को कब देखूँगा और अन्त में वे कहते हैं कि जिन करील के कुंजों में श्रीकृष्ण बचपन में छुपा करते थे; उन कटीले करील के कुंजों पर मैं सोने के करोड़ों राजमहल न्यौछावर कर सकता हूँ।

यह अपने आराध्य के प्रति बिना शर्त सर्वस्व समर्पण करने की भावना का दिग्दर्शन है।

हम आज भी देखते हैं कि जब गाँधीजी की चादर की नीलामी करते हैं तो वह चादर लाखों में जाती है। अब तो सिनेमा के अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की चीजों की भी नीलामी होने लगी है; वह तो करोड़ों से कम में नहीं जाती। इसको साहित्य में संबंध भावना कहते हैं। **हमारे प्रिय व्यक्ति के संयोग में जो-जो वस्तुएँ आती हैं, हम उन वस्तुओं को हर कीमत पर पाना चाहते हैं।**

यह भी भक्ति का, प्रेम का, राग का एक प्रकार है।

इसी को आधार बनाकर यहाँ संत कवि कहते हैं कि हे भगवान आपके यश के संयोग में आने के कारण कठोर बर्फीले पाषाणों के पिघलते जल का संयोग संबंध का विचार करके ही मैं आपके चरणों में समर्पित करने के लिए यह गंगाजल लाया हूँ।

कवि यह कहना चाहता है कि इस जल ने आपके यश का स्पर्श किया है; जिससे यह इतना महान हो गया है कि मेरे लिए इससे उत्तम कोई अन्य वस्तु नहीं है। यही कारण है कि मैं यह गंगाजल आपको अर्पित कर रहा हूँ। इस जल के माध्यम से मैं अपना सबसे प्रिय पदार्थ आपको समर्पण कर रहा हूँ।

सब लोगों के लिए एकदम सुपरिचित साधारण सी जल से होनेवाली पूजा को कवि ने किस अद्भुत कल्पना के साथ प्रस्तुत किया है।

इसमें कवि की काव्यप्रतिभा झलकती है। अभी तक आप इस छन्द का मर्म समझें बिना ही इसे पढ़ते रहे हैं; अब जब आप इस छन्द को पढ़ेंगे तो अद्भुत आनन्द आयेगा।

अब जयमाला का अर्थ आरंभ करते हैं। जयमाला के आरंभ में आनेवाला दोहा इसप्रकार है –

(दोहा)

पंच परम परमात्मा, रहित कर्म के फंद।
जग प्रपंच विरहित सदा, नमों सिद्ध सुखकंद।।१।।

कर्मों के फंदों से रहित पंचपरमेष्ठी ही परमात्मा हैं। आनन्द के कंद वे सिद्ध भगवान सदा ही जगत के प्रपंचों से रहित होते हैं। मैं

उन्हें नमस्कार करता हूँ।

दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि **अष्ट कर्मों के फंदों से रहित सिद्ध भगवान ही परम परमात्मा हैं और हमारे साथ न्याय करनेवाले पंच हैं। जगत के प्रपंचों से रहित सिद्ध भगवान सुख के कंद हैं, अन्दर-बाहर सर्वत्र सुख से पूर्णत: लबालब हैं।**

पूजन सिद्ध भगवान की चल रही है और बात पंचपरमेष्ठी की आ गई है। अरहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु अभी सिद्ध कहाँ हुए हैं; उन्हें सिद्धपद में शामिल क्यों कर रहे हैं ?

अभी तो बात इतनी स्पष्ट नहीं है, पर आगे सातवीं पूजन में तो पाँचों परमेष्ठियों को सौ-सौ अर्घ्य चढ़ायें जावेंगे।

सिद्ध पूजन में पंच-परमेष्ठियों को अर्घ्य क्यों ?

इस प्रश्न का उत्तर यह कहकर ही दिया जाता रहा है कि कुछ आज के सिद्ध हैं, कुछ कल के सिद्ध हैं। आखिर तो दूरान्दूर भव्यों को छोड़कर सभी भव्यों को एक न एक दिन मोक्ष जाना ही है। उनमें हम और आप भी शामिल हो सकते हैं ? आखिर त्रिकालवर्ती सिद्धों को हम नमस्कार करते ही हैं; उन्हें अर्घ्य चढ़ाते ही हैं, उनकी पूजा भी करते हैं।

जब हम भी भविष्य के सिद्ध हैं तो फिर यहाँ पंचपरमेष्ठियों तक ही सीमित क्यों रहे हैं, इसमें हमें व आपको भी शामिल करना चाहिए था।

अरे, भाई ! जब भविष्य के सिद्धों को नमस्कार करते हैं, तब उनमें आप भी शामिल रहते ही हैं।

तब तो रहते हैं, पर अभी यहाँ क्यों नहीं ?

इसलिए नहीं कि अभी आप पूरी तरह मोक्षमार्ग में नहीं चल रहे हैं और पंचपरमेष्ठी मुक्ति के मार्ग में या तो समर्पण भाव से चल रहे हैं या फिर मुक्त हो गये हैं।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि यहाँ किसी को भी नाम लेकर शामिल नहीं किया गया, मात्र पदों को ही शामिल किया गया है। नाम लेने से व्यक्ति को अभिमान हो जाता है। **मारीचि का भगवान ऋषभदेव ने भावी तीर्थंकर के रूप में नाम क्या लिया, फिर देखो, मारीचि के पर निकल आये। परिणाम जो हुआ, वह सबके सामने है।**

देखो, भाई ! हम व्यक्तियों के पुजारी नहीं, गुणों के पुजारी हैं, पदों के पुजारी हैं। यदि हम कहीं व्यक्तियों की पूजा भी करते हैं तो हम उनके गुणों के आधार पर ही करते हैं।

हमारे यहाँ तो साफ-साफ लिखा है -

जिसने राग-द्वेष-कामादिक जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।।

जिस व्यक्ति ने राग-द्वेष-काम आदि विकारों को जीत लिया हो, सारे जगत को जान लिया हो और सभी जीवों को निस्पृह हो मोक्षमार्ग का उपदेश दिया हो; अर्थात् जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो; उसका नाम कुछ भी क्यों न हो, महावीर हो, बुद्ध हो, जिन हो, हरि हो, हर हो; मैं तो अत्यन्त भक्तिभाव से उसे नमस्कार करता हूँ।

ध्यान रहे, हमारे यहाँ नाम की नहीं, गुणों की महिमा है। यही कारण है कि हम बिना किसी भेदभाव के सिद्धों की पूजा कर रहे हैं।

सिद्धों की पूजन में पंचपरमेष्ठी को शामिल करने का उक्त कारण तो महत्त्वपूर्ण है ही; पर एक बात यह भी तो है कि यद्यपि सिद्धों में अनन्त गुण हैं; तथापि छद्मस्थों को उनका जानना संभव नहीं है, कहना तो और भी अधिक असंभव है; क्योंकि उनमें अनन्त गुण हैं ह्न यह हम शास्त्रों में पढ़कर ही जानते हैं; सो भी वह इतना ही जानते हैं कि अनंत गुण हैं; वे कौन-कौन हैं, उनके क्या नाम हैं - यह नहीं जानते।

अत: यह भी कम महत्त्वपूर्ण कारण नहीं है। यही कारण है कि हम सिद्धचक्र पूजन में पंचपरमेष्ठियों को शामिल करते हैं, उनका सहारा लेते हैं।

विचारने की बात तब हो जाती है; जब हम इसप्रकार के प्रसंगों में अपने राग-द्वेष जोड़ने लगते हैं।

हमने मंदिर में त्रिमूर्ति विराजमान की। बीच में भगवान ऋषभदेव और अगल-बगल में भरत और बाहुबली। क्या इसमें हमें परिवारवाद नजर नहीं आता ?

ऐसा ही क्यों ? क्या ऐसा नहीं हो सकता था कि बीच में आदिनाथ और अगल-बगल में अजितनाथ और संभवनाथ; पर नहीं। हमने आजतक इसप्रकार की तीन मूर्तियाँ नहीं देखीं। क्या अजितनाथ और संभवनाथ भरत और बाहुबली से कम हैं।

जब हम कहते हैं कि ऐसा करो कि बीच में भरत; एक ओर आदिनाथ और दूसरी ओर बाहुबली।

तब पीछे से एकदम आवाज आती है - क्या बात करते हो, बीच में तो पिता को ही रहना चाहिए। क्या ऐसे चिन्तन पर परिवादवाद ही हावी नहीं है ? वीतरागी-सर्वज्ञ अरहंतों में बाप-बेटे कहाँ से आ गये ?

हम यह बात कह ही रहे थे कि एक भाई बीच में ही बोल उठे कि आप ठीक कहते हैं। हमने तो शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ की मूर्तियाँ स्थापित की हैं। इनमें कोई परिवारवाद नहीं है।

हाँ, परिवारवाद तो नहीं है; पर शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ ही क्यों, अनंतनाथ, धर्मनाथ और शान्तिनाथ कैसे रहते

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

17 अगस्त 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

शोक समाचार

1. कुरावली-मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्रीमती दयावती जैन का दिनांक 8 जुलाई को 90 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में गहन स्वाध्याय किया। आप प्रतिवर्ष जयपुर आकर शिविर का लाभ लिया करती थी। आपके सुपुत्र श्री केशवचन्दजी, शैशवचन्दजी की ओर से 300/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद के सम्माननीय सदस्य डॉ. बाबूलालजी सेठी की धर्मपत्नी **डॉ. विद्यावती जैन** का दिनांक 9 अगस्त,2013 को देहावसान हो गया। आप बहुत समय से अस्वस्थ चल रही थीं। आप टोडरमल स्मारक भवन की गतिविधियों में सदैव सहयोग करती थीं।

3. मुम्बई निवासी श्री अनिलजी कामदार का दिनांक 11 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन का बहुत काल गुरुदेवश्री के समागम में बिताया। आप बहुत गहन स्वाध्यायी थे। दादर मुमुक्षु मण्डल एवं टोडरमल स्मारक की गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहता था।

4. जयपुर (राज.) निवासी श्री प्रेमचन्दजी सोगाणी का दिनांक 7 जुलाई को 75 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से छूटकर मुक्ति की प्राप्ति करे - यही मंगल भावना है।

टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के विद्यार्थी ध्यान दें

मुक्त विद्यापीठ द्वारा आयोजित कोर्स के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून माह में सम्पन्न हो चुकी है, जिन केन्द्रों/छात्रों ने अभी तक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजीं है, उनसे निवेदन है कि वे शीघ्र उत्तर पुस्तिकायें भेजें, जिससे परीक्षा परिणाम उचित समय पर भेजा जा सके।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 9 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
9 से 18 सित.	इन्दौर	दशलक्षण महापर्व
6 से 15 अक्टूबर	जयपुर	जयपुर शिविर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व : विद्वानों की सूची

1. बाबू युगलकिशोरजी 'युगल'-**कोटा,** 2. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर-**इन्दौर (रवीन्द्र नाट्यगृह ढाईद्वीप),** 3. पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर-**जयपुर,** 4. ब्र. यशपालजी जैन जयपुर-**औरंगाबाद,** 5. पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा-**सोनागिर,** 6. ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना-**बेलगाँव,** 7. पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन-**ग्वालियर (फाल्के बाजार),** 8. ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद-**जबलपुर,** 9. ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना-**सेलू,** 10. पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर-**वस्त्रापुर (अहमदाबाद),** 11. पण्डित अभयकुमारजी जैन देवलाली-**दिल्ली (विश्वासनगर),** 12. ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल'-**निसईजी,** 13. ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली-**नागपुर,** 14.पण्डित कपूरचन्दजी 'कौशल' भोपाल-**पुणे (स्वाध्याय मण्डल),** 15. पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर-**बीना,** 16. पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन-**दिल्ली,** 17. पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा-**नवरंगपुरा (अहमदाबाद),** 18. पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद-**दादर मंदिर-मुम्बई,** 19. पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर-**मलाड (ईस्ट),** 20. पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन-**अलीगढ (मंगलायतन),** 21. पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट-**राजकोट,** 22. पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड-**दादर (मुम्बई),** 23. ब्र. कैलाशचन्दजी अचल-**भीलवाड़ा,** 24. डॉ. दीपकजी जयपुर-**गजपंथा,** 25. ब्र. कल्पनाबेन जयपुर-**खनियाँधाना,** 26. पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ-**मुम्बई (सीमंधर जिनालय),** 27.पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई-**बोरिवली मुम्बई,** 28.पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया-**इन्दौर (साधनानगर)।**

विदेश

1. डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी-**टोरंटो-कनाडा,** 2. पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर-**शिकागो-अमेरिका,** 3. पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई-**नैरोबी केन्या।**

अन्य विद्वानों की विस्तृत सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127